अध्याय –द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

शिक्षक प्रभावशीलता से संबंधित अध्ययन

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है, साहित्य पुनरावलोकन एक कठिन परिश्रम का कार्य है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो अथवा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हो साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य और प्रारंभिक कदम है। क्षेत्रीय अध्ययनों में जहाँ उपलब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा प्रदत्त संतुलन का कार्य होता है। समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है।

साहित्य के पुनरावलोकन के लाभ

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
2. ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिये आवश्यक है, कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है? वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
3. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अन्तर्दृष्टि प्राप्त हो सकती है।
4. पूर्व अनुसंधानों अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है। सत्यापन करने के लिये कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

महत्व

एक साहित्य समीक्षा एक शोध समस्या पर चयनित शोध का प्रलेखन है। एक समीक्षा एक अनुसंधान प्रक्रिया का गठन कर सकती है या अपने आप में एक शोध परियोजना का गठन कर सकती है । साहित्य की समीक्षा पिछले शोध का महत्वपूर्ण संश्लेषण है। यह प्रस्तावित अध्ययन के लिए एक पृष्ठभूमि प्रदान करता है कि संबंधित साहित्य की समीक्षा निम्नलिखित तरीके से मदद करती है :

- विषय से संबंधित महत्वपूर्ण चर को मजबूत करना । एक नया दृष्टिकोण हासिल करना।
- विचारों और व्यवहार के बीच संबंध की पहचान करना विषय या समस्या के संदर्भ स्थापित करना ।
- समस्या के महत्व को तर्कसंगत बनाना।
- संबंधित विचारों और आवेदन करने के लिए सिद्धांत ।

सम्बंधित साहित्य

- गुप्ता नीता और श्रीवास्तव नेहार्षी (2016) ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नौकरी की संतुष्टि के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया। तिहाड़ यूपी से 200 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का एक प्रतिनिधि नमूना एकत्र किया गया था। कुमार और मुथा (1999) द्वारा विकसित शिक्षक प्रभावशीलता पैमाने का उपयोग करके डेटा एकत्र किया गया था, भावनात्मक बुद्धिमत्ता को हाइड एट अल. (2001) द्वारा विकसित भावनात्मक बुद्धिमत्ता पैमाने का उपयोग करके मापा गया था और नौकरी संतुष्टि को नौकरी संतुष्टि पैमाने (कुमार और मुथा 2007) का उपयोग करके मापा गया था। उसके बाद डेटा के विश्लेषण के लिए टी-टेस्ट का उपयोग किया गया। परिणामों से पता चला कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कार्य संतुष्टि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

- रानी सरला और देवी पूर्णिमा (2015) ने लिंग, स्कूल के प्रकार और शिक्षण अनुभव के संबंध में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का पता लगाया। हरियाणा के सोनीपत जिले से यादृच्छिक रूप से चुने गए 150 शिक्षकों का एक प्रतिनिधि नमूना। शिक्षक प्रभावशीलता को पुरीगाखर द्वारा शिक्षक प्रभावशीलता पैमाने द्वारा मापा गया था। अध्ययन से पता चला कि सरकारी और निजी स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षकों की प्रभावशीलता में कोई खास अंतर नहीं पाया गया। परिणाम यह भी दर्शाते हैं कि 10 वर्ष से कम और अधिक के शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

- कौर प्रीतिंदरंद शर्मा सुषमा (2015) ने व्यावसायिक तनाव, लिंग और शिक्षण अनुभव के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया। पंजाब के बामला जिले के सरकारी और निजी स्कूलों से 250 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का एक प्रतिनिधि नमूना लिया गया था। शिक्षक प्रभावशीलता का उपयोग करके डेटा एकत्र किया गया था I

- कुलसुम (2011) द्वारा विकसित स्केल और श्रीवास्तव और सिंह द्वारा विकसित व्यावसायिक तनाव सूचकांक। एनोवा का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि शिक्षक की प्रभावशीलता व्यावसायिक तनाव के स्तर से प्रभावित नहीं होती है। शिक्षक प्रभावशीलता पर शिक्षण

अनुभव और लिंग का कोई महत्वपूर्ण अंतः क्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया गया। इसका यह भी निष्कर्ष है कि शिक्षक प्रभावशीलता पर व्यावसायिक तनाव, शिक्षण अनुभव और लिंग का कोई महत्वपूर्ण अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया गया।

- कुमारी अंजलि और पाधी कुमार (2014) ने कुछ जनसांख्यिकीय चर के संदर्भ में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का पता लगाया। 200 (ग्रामीण = 100, शहरी 100) माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण विधि द्वारा किया गया था। डेटा संग्रह के लिए प्रमोद कुमार और डी.एन मुथा द्वारा विकसित शिक्षक प्रभावशीलता पैमाने का उपयोग किया गया था। डेटा के विश्लेषण के लिए टी परीक्षण और एनोवा का उपयोग किया गया था। और विश्लेषण से पता चला कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता और लिंग के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था, लेकिन माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता और उनके निवास के प्रकार के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। लिंग और निवास के प्रकार के पारस्परिक प्रभाव के अनुसार शिक्षक प्रभावशीलता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया।

- कौत्संद कुमार (2014) ने संस्थान के प्रकार, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षण अनुभव के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया। अध्ययन में पंजाब के जालंधर और लुधियाना जिलों से मल्टी स्टेज रैंडम सैंपलिंग तकनीक के माध्यम से 739 शिक्षकों का एक नमूना शामिल किया गया था। डेटा संग्रह के लिए दो उपकरणों का उपयोग किया गया था, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षक प्रभावशीलता पैमाने पर सी. आर. दारोलिया द्वारा विकसित 80 आइटम प्रश्नावली, कुमार और मुथा द्वारा विकसित की गई थी। निष्कर्षों के सांख्यिकीय महत्व का मूल्यांकन करने के लिए 3-तरफा एनोवा विश्लेषण किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि शिक्षक प्रभावशीलता और स्कूल के प्रकार यानी सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले शिक्षक कम भावनात्मक बुद्धि वाले शिक्षक की तुलना में अत्यधिक प्रभावी होते हैं।

- ओगोची, जॉर्ज (2014) ने केन्या के ट्रांस मारा वेस्ट डिस्ट्रिक्ट में माध्यमिक विद्यालयों में नौकरी की संतुष्टि और शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया। केन्या के 16 पंजीकृत सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालयों में से 130 उत्तरदाताओं का चयन किया गया। डेटा संग्रह के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण का उपयोग किया गया था। विश्लेषण से पता चला कि शिक्षक प्रभावशीलता का स्तर अच्छा था। अधिकांश

उत्तरदाताओं ने दिखाया कि उन्होंने प्रभावी ढंग से अपने कर्तव्यों का पालन किया। परिणाम यह भी संकेत देते हैं कि यदि शिक्षकों को पर्याप्त स्वायत्तता दी जाए तो उनकी प्रेरणा को बढ़ाया जा सकता है।

- त्यागी श्वेता (2013) ने उनकी जनसांख्यिकीय विशेषताओं के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का पता लगाया। अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की जनसांख्यिकीय विशेषताओं का अध्ययन करना था। डेटा एकत्र करने के लिए स्व-निर्मित उपकरण तैयार किया गया था और डेटा के विश्लेषण के लिए टी परीक्षण को नियोजित किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता जनसांख्यिकीय विशेषताओं से संबंधित थी।

- बाबू और कुमारीएम (2013) ने शिक्षक प्रभावशीलता के भविष्यवक्ता के रूप में संगठनात्मक जलवायु का अध्ययन किया। झारखंड के कोडरमा जिले से 100 प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का एक प्रतिनिधि नमूना यादृच्छिक नमूनाकरण विधि द्वारा चुना गया था। नमूने में सरकारी स्कूलों के 50 शिक्षक और निजी स्कूलों के 50 शिक्षक शामिल हैं। डेटा संग्रह के लिए संगठनात्मक माहौल को मोतीलाल शर्मा द्वारा विकसित वर्णनात्मक प्रश्नावली (SOCDQ) द्वारा मापा गया था। विश्लेषण से पता चला कि कोडरमा जिले के प्रारंभिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता और संगठनात्मक माहौल के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

- बोरकर ए. उषा (2013) ने शिक्षक तनाव के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया। मल्टी स्टेज सैंपलिंग तकनीक के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया था। मुंबई क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों से 1000 शिक्षकों का एक प्रतिनिधि नमूना चुना गया था। व्याख्या से पता चला कि उच्च प्रभावी शिक्षक कम तनाव में हैं जबकि कम प्रभावी शिक्षक अधिक तनाव में हैं। तो यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षक तनाव का शिक्षक प्रभावशीलता के साथ नकारात्मक संबंध है।

- साहनी और कौर (2011) ने प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की आत्म-अवधारणा के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया। नमूने में पंजाब राज्य के 100 प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक शामिल थे। डेटा संग्रह के लिए कुमार और मुथा द्वारा विकसित शिक्षक प्रभावशीलता स्केल और मोहसिन द्वारा सेल्फ-

कॉन्सेप्ट इन्वेंटरी का उपयोग किया गया था। परिणामों से पता चला कि पुरुष और महिला प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, लेकिन पुरुष और महिला प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की आत्म-अवधारणा के बीच महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। परिणामों ने शिक्षक प्रभावशीलता और पुरुष और महिला प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की आत्म-अवधारणा के बीच महत्वपूर्ण संबंध भी दिखाया।

- ढिल्लों और नवदीप (2010) ने उनके मूल्य पैटर्न के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता की जांच की। 200 (100 पुरुष और 100 महिला) माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का एक प्रतिनिधि नमूना यादृच्छिक रूप से चुना गया था। डेटा संग्रह के लिए शिक्षक प्रभावशीलता स्केल (टीईएस) और शिक्षक मूल्य सूची (टीवीआई) का उपयोग किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि शिक्षक प्रभावशीलता और शिक्षकों के मूल्य पैटर्न के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पुरुषों की शिक्षक प्रभावशीलता के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था, और महिला, सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक। परिणामों से यह भी पता चला कि पुरुष और महिला शिक्षकों और सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्य पैटर्न में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

- रोनाल्ड (2009) ने क्रमिक शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता की जांच की और पाया कि क्रमिक शिक्षकों की प्रभावशीलता पढ़ने और गणित में छात्र की उपलब्धि से संबंधित थी। दूसरे, स्कूलों की संगठनात्मक संपत्ति के रूप में सामूहिक शिक्षक प्रभावशीलता छात्रों की उपलब्धि से सकारात्मक रूप से संबंधित थी। जबकि स्कूल के शिक्षण स्टाफ की स्थिरता और उसके शैक्षणिक संगठन और शिक्षण प्रक्रियाओं की गुणवत्ता भी उपलब्धि स्तरों से सकारात्मक रूप से संबंधित थी।

- अकिरी और उगबोरुग्बो (2009) ने डेल्टा राज्य, नाइजीरिया में सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की प्रभावशीलता और छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन का अध्ययन किया। डेटा संग्रह के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण का उपयोग किया गया था। नाइजीरिया के 361 पब्लिक स्कूलों से 979 शिक्षकों का एक नमूना लिया गया था। प्रति शिक्षक 50 छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन स्कोर का भी उपयोग किया गया। डेटा सहसंबंध के विश्लेषण के लिए, टी परीक्षण और विचरण के एकल कारक विश्लेषण का उपयोग किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि छात्र अपने प्रदर्शन में उल्लेखनीय रूप से भिन्न नहीं थे। हालाँकि, प्रभावी शिक्षकों ने अप्रभावी शिक्षकों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्र पैदा किए।

लेकिन स्कूल का माहौल जैसा एक अन्य कारक भी था जो छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को भी प्रभावित करता है, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षक की प्रभावशीलता छात्रों की उपलब्धि के लिए केवल एकमात्र कारक नहीं है।

- थॉमसजकेन एट अल(2008) ने न्यूयॉर्क शहर के पब्लिक स्कूलों में नियोजित शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। औसतन, एक शिक्षक की प्रारंभिक प्रमाणीकरण स्थिति का छात्र परीक्षण प्रदर्शन पर छोटा प्रभाव पड़ता है। परिणाम यह भी इंगित करते हैं कि प्रारंभिक प्रमाणन स्थिति द्वारा शिक्षकों के बीच कारोबार, शिक्षकों को काम पर रखने की छात्र उपलब्धि को अप्रत्याशित रूप से उच्च स्तर पर प्रभावित करता है।

- सिंग और मोहनजी (1996) ने नौकरी की चिन्ता और नौकरी का स्तर पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य नौकरी का स्तर और नौकरी की चिन्ता के बीच प्रभावी भूमिका संबंध का अध्ययन करना है। इसमें 100 मैनेजर और 100 सुपरवाइजर भिलाई के रिफेक्टोरिश फ्लाट में कार्यरत लोगों पर किया गया इस अध्ययन के लिए भूमिका प्रभावी स्केल पारिख और नौकरी चिन्ता स्केल जिस पर भिलाई रिफेक्टोरिश में कार्यरत 200 कर्मचारियो पर न्यादर्श किया गया। इस अध्ययन का मुख्य परिणाम नकारात्मक पाया गया कि इस अध्ययन ने भूमिका प्रभावी और नौकरी की चिन्ता के बीच नाकारात्मक सम्बन्ध पाया गया। कर्मचारियों में मैनेजर को उनके प्रभावी भूमिका की चिन्ता सुपरवाइजर की तुलना में अधिक पाया गया। अतः परिणाम मिला की नौकरी की चिन्ता और नौकरी के स्तर दोनों प्रभावी भूमिका को प्रभावित करता है।

- सेवल (2000) : ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षको में प्रभावी भूमिका और बदलती प्रवृत्ति का अध्ययन किया। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है :-

1. माध्यमिक विद्यालय के प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित शिक्षकों में प्रभावी भूमिका का अध्ययन करना ।
2. इस अध्ययन के लिये भोपाल शहर के 16 माध्यमिक विद्यालयों के 124 शिक्षकों को चुना गया। इस अध्ययन के लिये एम. मुखोपाध्याय का बदलती प्रवृत्ति परिसूची और उदय पारीक्षा का प्रभावी भूमिका स्केल का उपयोग किया।
3. इस अध्यय का मुख्य निष्कर्ष निम्न है :-

- अप्रशिक्षित शिक्षक प्रशिक्षित शिक्षक की तुलना में अधिक प्रभावी थे।
- 4 साल से कम उम्र के शिक्षक की प्रभावी 40 साल से अधिक शिक्षकों से अधिक है।

- अरेरा 1988 ने प्रभावी और अप्रभावी शिक्षक का अध्ययन उनके शैक्षिक योग्यता व्यवसाय अंक नौकरी संतुष्टि सामाजिक आर्थिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि, अभिवृत्ति और कुछ समसामायिक शैक्षिक प्रयोग के आधार पर प्रभावीता और अप्रभाविता का अध्ययन किया। उन्होंने नौकरी संतुष्टि नौकरी चलनशीलता, कार्य कारणी परिस्थिति, स्कूल दूरी वर्तमान कार्य और व्यवसाय के प्रभावी और अप्रभावी शिक्षकों ने अंतर करने के लिये अध्ययन किया गया।

- पासी और शर्मा तथा अन्य (1982) लिंग के आधार पर शिक्षकों की प्रभाविता का अध्ययन किया। इसमें महिला और पुरुष शिक्षकों में उनके शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है शिक्षक पाँचवा सर्वेक्षण अनुसंधान 1988-19 कोयम्बटूर सिकर, रंगरामन, एस (1839) ने इस अध्ययन के निम्मालिखित उद्देश्य है।

1. शिक्षकों ने उनके उच्च और निम्न वेतन और सामंजस्य के बीच सार्थक स्तर पर अंतर ज्ञात करना ।
2. शिक्षकों के उच्च और निम्न वेतन और उनके नौकरी का संतुष्टि के बीच सामंजस्य सार्थक स्तर पर अंतर ज्ञात करना ।
3. 37 शिक्षकों को दोनों लिंग के आधार को ही यादृश्यिक विधि द्वारा सम्मिलित किया गया इन्हें अलीगढ़ ए. एम. व्ही. अन्य विद्यालय, अटमालि विद्यालय हरिद्वार से सलेक्ट किया गया।

- अग्रवाल एम. (1991) ने माध्यमिक स्तर एवं सेकेण्डरी स्कूल शिक्षकों के एवं संतुष्टि का अध्ययन उनके जाति कार्य स्थन, मातृभाषा के आधार पर किया। पुरुष में स्नातक प्रशिक्षित शिक्षक महिला शिक्षक अधिक संतुष्ट दिखाई दे रहे थे। आयु और वैवाहिक स्थिति का कार्य संतुष्टि में कोई सम्बंध नहीं पाया गया। आर्थिक, राजनैतिक मूल्यों को कार्य संतुष्टि से संबन्धित पाया गया।

- कलेमेश नायक, जी. सी. (1990) ने पाया कि एम.एस. यूनीवर्सिटी, बड़ौदा के सतुलिया शिक्षक अपने कार्य से संतुष्टि में अपनी शिक्षक व्यवसाय के प्रति सकारात्मक भमितृप्ति के कारण।

- राना मोहन बाबू वी. (1972) के मतानुसार कम अनुभव और शिक्षक के प्रति अनुकूल अभितृप्तमी शिक्षण दक्षत का संबंध उच्च कार्य संतृष्टि से है शिक्षक जो शाला एवं स्वाध्यायी वातावरण मे कार्य करते है, इनमें

उच्च कार्य संतुष्टि पायी गयी जबकि शिक्षक जो बंद, वातावरण में कार्य करते है इनमें कम निम्न कार्य संतुष्टि पायी गयी । कार्य संतुष्टि के स्तर पर शारीरिक स्वास्थ्य जीवन और कार्य में तनलीनता का सकारात्मक प्रभाव पड़ना है।

- सक्सेना एन. (1990) ने मध्यप्रदेश उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों लिंग : और अन्य स्तरों के आधार पर कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया।

- अग्रवाल एस. (1988) माध्यमिक विद्यालय के अधिक प्रभावी तथा कम प्रभावी शिक्षकों महिला अध्यात्मियों के कार्य समायोजन तथा उच्च कारकों का अध्ययन करना।